पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक १, जालंधर छावनी

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO.1, JALANDHAR CANTT

विद्यालय पत्रिका (2025-2026)

SCHOOL MAGAZINE (2025-2026)



संदेश



श्री विकास गुप्ता

आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 जालंधर छावनी , शैक्षणिक सत्र 2025-2026 के लिए विद्यालय पत्रिका प्रकाशित कर रहा है।

यह पत्रिका छात्रों को सार्थक अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता दिखाने के लिए एक शानदार मंच प्रदान करती है। यह समुदाय के लिए स्कूल की विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति और विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करने का एक अवसर भी है।

मैं प्राचार्य, स्टाफ और छात्रों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ, और विद्यालय पत्रिका को सफलतापूर्वक प्रकाशित करने में उनके समर्पित प्रयासों की सराहना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

विकास गुप्ता

संदेश



श्रीमती प्रीति सक्सेना

उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 जालंधर छावनी,सत्र 2025-26 के लिए अपनी वार्षिक विद्यालय पत्रिका प्रकाशित कर रहा है।विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक क्षमता, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है। इसके माध्यम से समाज को भी विद्यालय द्वारा वर्षभर में किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है, क्योंकि विद्यालय पत्रिका विद्यालय की शैक्षणिक तथा सह-शैक्षणिक गतिविधियों का प्रतिबिंब होती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर मैं विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों तथा छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। उनके निरंतर प्रयास, सहयोग और मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप इस वर्ष का अंक प्रकाशित हो रहा है।

शुभकामनाओं सहित,
प्रीति सक्सेना
उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

संदेश



श्री जुगल किशोर
सहायक आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1, जालंधर छावनी शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए विद्यालय पत्रिका का वार्षिक अंक प्रकाशित कर रहा है। मानव मन कल्पना और रचनात्मकता का उपजाऊ मैदान है और विद्यालय वह स्थान है जहाँ विद्यार्थियों की कल्पना और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जाता है। विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को लेख, कलाकृतियों, कार्यशील मॉडलों और शोध परियोजनाओं के रूप में निखारा जा सकता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन वर्ष भर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन करके विद्यार्थियों को कई तरह की चुनौतियाँ प्रदान करता है, जहाँ उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को कविता, गद्य, हास्य और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रकट करने का एक विशेष मंच है। मुझे आशा है कि आपकी विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों और शिक्षकों की रचनात्मक कृतियों का खजाना बनेगी, साथ ही साथ पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में आपके विद्यालय की उपलब्धियों का उदाहरण प्रस्तुत करेगी। विद्यालय पत्रिका को पूर्ण वैभव के साथ प्रकाशित करने के इस प्रयास के लिए संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित,
जुगल किशोर
सहायक आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

संदेश



मेजर जनरल आशीष भारद्वाज,
अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधक समिति
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 जालंधर छावनी

मैं पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 जालंधर छावनी के प्रधानाचार्य, स्टाफ तथा छात्रों को विद्यालय की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ। यह पत्रिका विद्यालय की उपलब्धियों का सुंदर प्रतिबिंब है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को अभिव्यक्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

विद्यालय खेलकूद तथा विभिन्न पाठ्यक्रम-संबंधी गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए निरंतर सफलता की नई ऊँचाइयों को छू रहा है। विद्यालय का शिक्षण स्टाफ अत्यंत कुशल है और बच्चों के सर्वांगीण विकास के प्रति समर्पित भी। वे विद्यार्थियों को योग्य और जिम्मेदार नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

इस विद्यालय से जुड़ना मेरे लिए अत्यंत सुखद और प्रेरणादायक अनुभव रहा है। मैं विद्यालय के स्टाफ और छात्रों को उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर सफलता की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभ पठन।

"जय हिन्द"

प्रधानाचार्य का संदेश



प्रिय छात्र एवं छात्राओं,

मुझे अत्यंत गर्व और प्रसन्नता हो रही है कि हमारे विद्यालय की पत्रिका में आप सभी ने अपनी रचनात्मकता और अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। यह पत्रिका न केवल आपके विचारों का संग्रह है, बल्कि आपकी कल्पनाशक्ति, मेहनत और विचारशीलता का भी प्रमाण है।

आपके द्वारा प्रस्तुत कविताएँ, लेख, चित्रकला, और अन्य रचनाएँ अत्यंत प्रेरणादायक हैं। इनसे यह स्पष्ट होता है कि आप सभी के अंदर कितनी अद्वितीय सोच और नई दृष्टिकोण हैं। आपकी रचनाएँ विद्यालय के अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगी और उन्हें भी अपनी रचनात्मकता को पहचानने व व्यक्त करने का अवसर प्रदान करेंगी।

रचनात्मकता हमारी शिक्षा का अभिन्न अंग है, जो न केवल हमारी सोच को विस्तार देती है, बल्कि हमें जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति की ओर ले जाती है। मुझे आशा है कि आप सभी इसी प्रकार अपने विचारों को नए रंग और दिशा देते रहेंगे।

इस अद्वितीय योगदान के लिए मैं सभी छात्रों को बधाई देता हूँ। विद्यालय को आप पर गर्व है।

धन्यवाद और शुभकामनाएँ!

आपका प्रधानाचार्य

उपप्राचार्य का संदेश



विद्यालय पत्रिका का एक और अंक प्रकाशित होने जा रहा है। प्रत्येक वर्ष की भाँति, इस वर्ष भी छात्रों ने अपनी उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं में हमारे उभरते लेखकों, कवियों और साहित्यकारों की प्रतिभा स्पष्ट झलकती है। जहाँ इस नन्ही पत्रिका में विद्यार्थियों की मौलिकता दिखाई देती है, वहीं कुछ छात्र अपने अनुभवों और विचारों को भी रचनात्मक रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं। हम सभी का प्रयास हमेशा यही रहता है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में जीवन-मूल्यों, संस्कृति, जागरूकता और सामर्थ्य के प्रसार का माध्यम बने।

मैं सभी विद्यार्थियों को उनकी प्रस्तुति पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। ईश्वर करे आप सभी निरंतर सफलता प्राप्त करें और नए-नए आयामों को छूने के लिए सदैव प्रयासरत रहें।

धन्यवाद और शुभकामनाएँ

आपका उपप्राचार्य

संपादक मंडल



मार्गदर्शक - श्री हनि मेहता (प्राचार्य)

शिक्षक - श्रीमती निरुपमा शर्मा , श्रीमती अनुसुया रॉय चैटर्जी , श्रीमती उत्तमा यादव , श्रीमती नमिता शर्मा , श्रीमती पूजा भगत , श्रीमती ममता गुप्ता , श्रीमती मंजु आर्या , सुश्री प्रभजोत कौर , सुश्री मेघा कटोच

विद्यार्थी - पृथ्वी सिंह , राजवंश , निकिता सिंह , दीपिका , अंजलि , बबिता चौहान , मनजिंदर कौर, तन्वी , रेणुका गोपाल नेसूर , अमर तिवारी , अपेक्षा

SCHOOL ACHIEVERS

2024-2025



वार्षिक प्रतिवेदन

सभी उपस्थित महानुभावों को मेरा सादर अभिवादन।

माननीय और अत्यंत आदरणीय मेजर जनरल आशीष भारद्वाज,

अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधक समिति पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 जालंधर छावनी आप सभी को हमारे निमंत्रण को स्वीकार करने और इस अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मैं शैक्षणिक वर्ष 2025 का यह वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह वर्ष महत्वपूर्ण उपलब्धियों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की हमारी निरंतर प्रतिबद्धता से परिपूर्ण रहा है।

दूर दराज़ और-कठिन क्षेत्रों में केन्द्रीय विद्यालयों का उल्लेखनीय प्रभुत्व हमें गर्व से भर देता है। जहाँ निजी विद्यालय उपलब्ध नहीं हैं या नाममात्र की फीस पर शिक्षा संभव नहीं है, वहाँ केंद्रीय विद्यालय संगठन रक्षा कर्मियों के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करता है। एक रक्षा पेशेवर तभी राष्ट्र की सेवा निष्ठा से कर सकता है जब उसे यह विश्वास हो कि उसके बच्चे उचित शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ₹600 की नाममात्र फीस के साथ, हम सुगमता, उत्कृष्टता और राष्ट्रनिर्माण के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता को बनाए रखते हैं।-

विद्यालय की अवसंरचना पर रिपोर्ट

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 जालंधर छावनी, हरदयाल रोड पर स्थित है और वर्ष 1978 से समुदाय की सेवा कर रहा है। वर्तमान में विद्यालय में कुल 1,432 छात्र नामांकित हैं तथा 72 कर्मचारी कार्यरत हैं।

पुराना बुनियादी ढाँचा

अपनी स्थापना के बाद से, विद्यालय ने छात्रों की शैक्षणिक और सह-पाठ्यचर्या संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक कार्यात्मक बुनियादी ढाँचा बनाए रखा है। मौजूदा कक्षाएँ, प्रशासनिक खंड और बुनियादी सुविधाएँ वर्षों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती रही हैं।

नया बुनियादी ढाँचा (पीएम श्री योजना के अंतर्गत)

पीएम श्री योजना के अंतर्गत, विद्यालय के बुनियादी ढाँचे का महत्वपूर्ण विकास और उन्नयन किया गया है।

सुधार कार्यों में शामिल हैं -

कक्षाओं की रंगाई-पुताई के माध्यम से सौंदर्यपरक नवीनीकरण। कर्मचारियों और छात्रों दोनों के लिए शौचालयों की मरम्मत और रखरखाव। इस वर्ष 2025 हमने कौशल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक नई व्यावसायिक प्रयोगशाला का निर्माण किया है। कक्षाओं और कार्यालयों के लिए फर्नीचर का काम और नए फर्नीचर की खरीद की गई है। हमने इंटरैक्टिव पैनल और डिजिटल शिक्षण उपकरणों के साथ कक्षा को उन्नत किया है। समग्र शिक्षण वातावरण को बेहतर बनाने के उद्देश्य से कई अन्य छोटे-छोटे कार्य भी किए गए हैं।

इन पहलों ने एक अधिक आधुनिक, छात्र-अनुकूल और संसाधनपूर्ण विद्यालय वातावरण बनाने में योगदान दिया है।

शैक्षणिक उत्कृष्टता

हमें गर्व है कि 2024-25 सत्र के कक्षा 10 के विद्यार्थियों ने अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों से विद्यालय का नाम रोशन किया है, जिससे हमारे गौरव में एक और उपलब्धि जुड़ गई है। मई 2025 में आयोजित CBSE कक्षा 10 की परीक्षा में हमने 100% परिणाम प्राप्त किए। यह हमारे समर्पित स्टाफ के निरंतर प्रयासों, अतिरिक्त कक्षाओं और अन्य सुधारात्मक उपायों के कारण संभव हो सका।

कक्षा XII के गुणवत्ताधारी (टॉपर्स)

विज्ञान संकाय

1. सोनिया यादव - प्रथम स्थान - 94%
2. स्नेहा - द्वितीय स्थान - 89.8%
3. जी. एस. गणपति - तृतीय स्थान - 89.6% (रसायन विज्ञान - 100 अंक)

वाणिज्य संकाय

1. वशान्वी - प्रथम स्थान - 90.6%

2. भोला झा - द्वितीय स्थान - 87.8%

विशाल चौहान - द्वितीय स्थान - 87.8%

3. इशिता जाना - तृतीय स्थान - 85.6%

मानविकी संकाय

1. अबर्णा तिवारी - प्रथम स्थान - 96.6%
2. गुनीत कौर - द्वितीय स्थान - 91.8%
3. पी .स्वरा तेजा - तृतीय स्थान - 91.6%

कक्षा X के गुणवत्ताधारी (टॉपर्स)

1. अपार दुबे - प्रथम स्थान - 95.6%
2. प्रणव पुष्कर - द्वितीय स्थान - 95.2%
3. संस्कार - तृतीय स्थान - 92.8%

वे विद्यार्थी जिन्होंने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए

1. अन्वेषा बिस्वास - 92% - कक्षा 10
2. परिधि प्रकाश - 91.2% - कक्षा 10
3. रियाज़प्रीत सिंह -90.6 %- कक्षा 10
4. यशिका यादव -91.2% - कक्षा 12 मानविकी संकाय

खेल

हमारा विद्यालय खेल, शारीरिक अनुकूलता, स्वास्थ्य शिक्षा तथा प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को समान महत्व देता है। प्रतिदिन होने वाले प्रातःकालीन व्यायाम और नियमित खेल अवधि के साथ-साथ विद्यार्थी इंटर-हाउस प्रतियोगिताओं के माध्यम से खेलों और योग की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। विद्यार्थियों को चार सदनों में विभाजित किया गया है, जिससे व्यक्तिगत तथा टीम दोनों स्तरों पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलता है।

सालभर कक्षा-स्तरीय प्रतियोगिताएँ जैसे खो-खो, फुटबॉल और हॉकी आयोजित की जाती हैं। इस वर्ष के केंद्रीय विद्यालय संगठन वार्षिक खेलकूद समारोह में हमारे विद्यालय ने विभिन्न उपलब्धियों के साथ अपना गौरव बढ़ाया, जिनमें शामिल हैं–

लवलीन कौर - कक्षा 10 'क'
लॉन टेनिस (बालक वर्ग) - परमप्रीत सिंह, कक्षा 8 'ख' ने रजत पदक प्राप्त किया
फुटबॉल (बालक वर्ग) - परमवीर चहल, अर्शप्रीत सिंह, शुभम ने सहभागिता की

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों ने विद्यार्थियों के विद्यालय जीवन को और अधिक समृद्ध बनाया। हिंदी वाचन, तात्कालिक भाषण, कोलाज निर्माण, फैंसी ड्रेस, चित्रकला, पेंटिंग, रंगोली, समूह गीत, प्रश्नोतरी,नाट्य गीत और समूह नृत्य जैसी विभिन्न गतिविधियों ने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए उत्कृष्ट मंच प्रदान किया। शिक्षकों ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक छात्र को मंच पर आने और प्रस्तुति देने का अवसर अवश्य मिले।
अंतर-सदन संगीत, नृत्य, नाटक और कला प्रतियोगिताओं ने विद्यालय में सांस्कृतिक उत्साह को और अधिक जीवंत बनाया। इसी के साथ ECO CLUB ने पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परामर्श सेवाएँ

विद्यालय में परामर्श सेवाएँ एक पूर्णकालिक काउंसलर के माध्यम से उपलब्ध कराई गईं, जिसमें मानसिक स्वास्थ्य , जागरूकता सत्र और नियमित शैक्षणिक मार्गदर्शन शामिल था। स्वास्थ्य और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षण, प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण तथा वर्ष में दो बार अग्नि सुरक्षा अभ्यास आयोजित किए गए।

शिक्षण और अधिगम उपक्रम

शिक्षण एवं अधिगम के क्षेत्र में व्यावसायिक विकास, नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों पर आधारित कार्यशालाओं, बाहरी प्रमाणन कार्यक्रमों, डिजिटल शिक्षा पाठ्यक्रमों तथा विषय-विशेष संगोष्ठियों के माध्यम से समृद्ध हुआ।

प्रौद्योगिकी एकीकरण

मिश्रित शिक्षण, प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम, फ्लिप्ड क्लासरूम और सुधारात्मक कक्षाओं जैसी आधुनिक पद्धतियों ने शिक्षण प्रक्रिया को और सशक्त किया। प्रौद्योगिकी के समुचित एकीकरण ने पूरे तंत्र को मज़बूत बनाया–

LMS आधारित असाइनमेंट,

वर्चुअल अभिभावक-शिक्षक बैठकें ,

ई-लाइब्रेरी की सुविधा,

डिजिटल मूल्यांकन उपकरण

इन सबने शिक्षण-अधिगम वातावरण को गतिशील, आधुनिक और प्रगतिशील बनाया, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को बेहतर शैक्षणिक अनुभव प्राप्त हो सका।

लक्ष्य

विद्यालय का उद्देश्य अपने शैक्षणिक, सह-पाठ्यचर्या तथा अवसंरचनात्मक मानकों को और अधिक सुदृढ़ करना है, ताकि प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को प्रभावी रूप से समर्थन मिल सके। आगामी वर्ष के लिए हमारे प्रमुख लक्ष्य इस प्रकार हैं:

शैक्षणिक उत्कृष्टता

सुधारात्मक (Remedial) तथा संवर्धन (Enrichment) कार्यक्रमों के माध्यम से आधारभूत सीखने को मजबूत करना।

उन्नत शिक्षण एवं व्यावसायिक विकास

शिक्षकों के लिए नई शिक्षण पद्धतियों और तकनीकी उपकरणों पर निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यशालाएँ आयोजित करना।

धन्यवाद ।

SECONDARY SECTION

माध्यमिक अनुभाग



मनुष्य के जीवन में आत्मज्ञान का महत्व

आत्मज्ञान का अर्थ है, स्वयं को गहराई से जानना, अपनी शक्तियों को , कमजोरियों को भावनाओं और विचारों को समझना ही आत्म ज्ञान कहलाता है। इससे व्यक्ति स्वयं के निर्णय लेने में समर्थ हो जाता है। अगर हम स्वयं के समर्थवान नहीं है तो हम किसी को भी अपनी राय नहीं दे सकते हैं। आत्मज्ञान हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है और जिसने आत्मज्ञान को पा लिया वही दुनिया का सबसे ज्ञानी कहलाता है। हम किसी के लिए अपनी राय तभी दे सकते हैं जब हम खुद अपनी शक्तियों और कमजोरियों को पहचानने में समर्थ हों । इसलिए हर व्यक्ति का आत्मज्ञान से परिचित होना महत्वपूर्ण है।

ईशा

नौवीं 'क'

सीख

माता-पिता का सम्मान

माता-पिता के बारे में बहुत लोगों ने बहुत कुछ लिखा है और मैं भी आज कुछ लिखने जा रही हूँ। माता-पिता ही दो ऐसे लोग हैं जो हम सब का इस दुनिया में आने का कारण होते हैं। हम सभी लोग भगवान को ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं पर हमें नहीं पता होता है कि हमारे माता-पिता जिन्होंने हमे पाला, हमारी परवरिश की है वही हमारे लिए भगवान् समान हैं । सभी लोग भगवान की सेवा करना चाहते है पर उन्हें पता नहीं उनके साथ उनके माता-पिता ही भगवान का रूप है और हमें उन्ही की सेवा करनी चाहिए और अगर हमने सच्चे मन से अपने माता-पिता की सेवा की तो इसका मतलब यह है हमने भगवान की सेवा कर दी। हमारे माँ-बाप, हमें बचपन में पढ़ाते - लिखाते हैं जिससे हम बड़े होकर अपने पैरों पर खड़े हो सकें ।

अनन्या

नौवीं क

बचपन

कागज़ की कश्ती थी ,पानी का किनारा था,
कागज़ की कश्ती थी, पानी का किनारा था,
खेलने की मस्ती थी,
वो दिन भी अवारा था,
कहाँ फस गए इस समझदारी के दल –दल में
वो नादान बचपन भी कितना प्यारा था।

नैंसी

कक्षा-नौवीं क

माँ

मेरी माँ जहाँ से न्यारी,
लगती है मुझे सबसे प्यारी।
जब मुझे वह डाँटती है,
मेरी हर गलती को सुधारती है।
सिखाती मुझे हर चीज है,
बातों में उसकी सीख है।
लोरी देकर जब सुलाती,
अच्छे से नींद आ जाती है।
माँ का प्यार अनमोल है,
बाकी सब बेफजूल है।

हरमन
नौवीं क

हमारे गुरु

कोरे कागज़ को अखबार बनाता है
गुरु को जिंदगी का हर हिसाब आता है।
रंग बिरंगे फूलों से वो संसार को बाग बनाता है।
वहीं तो है जो तारों को भी रोशनी देकर
खुद सूरज बनकर जगमगाता है।
नटखट शैतान बच्चों की लाख शैतानियाँ सहता है,
फिर भी गुरु धैर्यवान रहता है।
ज्ञान की एक-एक बूँद से,
सींचता है वो अपनी फसल ।
तभी तो शिष्य कभी अर्जुन,
कभी राम बनकर परचम लहराता है ।

हरमनजीत कौर
दसवीं क

हमारी जिम्मेदारी

प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षाः
प्राकृतिक आपदाएं जैसे- भूकंप, बाढ़, तूफान अचानक आ जाते हैं और बहुत नुकसान कर सकती हैं। लेकिन हम पहले से सतर्क रहें और सही जानकारी रखें, तो इनसे होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है।
भूकंप से सुरक्षाः- मजबूत इमारतों का निर्माण करें जो भूकंप - रोधी हों।
बाढ़ से बचाव - अपने घर को ऊँचे स्थान पर बनवाएँ या ऊँचाई का ध्यान रखें।
तूफान - रेडियो या टीवी से मौसम की जानकारी लेते रहें।

पलवी सातवीं क

छीन न पाओगे

रोटी छीनी, धन छीना
छीन लिया मान !! वस्त्र छीने किताबें छीनी
छीन लिया अभिमान ।।
कुछ भी कर लो,
न छीन पाओगे ज्ञान ।।

न गलत के आगे झुकेंगे,
न डराने पे रुकेंगे
काँटे कितने भी बिछालो पथ में,
न अल में कदम मुड़ेंगे ॥
मुझे विद्या का है वरदान,
कुछ भी कर लो मगर,
न छीन पाओगे ज्ञान ।।

धमकी जिंदगी छीन लेने की,
न छीन पाएगी मेरे प्राण !
गोली में इतनी ताकत नहीं,
जो छीन ले मेरा स्थान,
कुछ भी कर लो मगर,
छीन न पाओगे हमारा ज्ञान ॥

आरिश
दसवीं क

मैं थमा नहीं

मैं थमा नहीं अंधेरों से
जब दीप जले, तब चला नहीं।
चोटें खाकर मुस्काया मैं,
जब हर कोई था डरा वहीं।

नदियाँ रोकी, पर्वत आये.
आँधी ने जब रस्ता छीना,
मैं पत्थर बन सीधा बढ़ा,
हर बाधा से सीना ठोका ।

कहा जगत ने- “थक जाएगा”
मन बोला - “अब भी दम बाकी,”
हर आँसू को मोती करके ।
मैंने पाई अपनी झांकी।

जो खो गया, वो शोक नहीं
जो पाया उसका घमंड नहीं,
मै चलता हूँ बस उस पथ पर,
जहाँ खुदा भी साथ नहीं।

हार मेरी मंजिल कैसे ?
यह प्रश्न मुझे जलाता है
जीवन मेरा युद्ध बना है,
पर मैं हर युद्ध जीत जाता हूँ

कनिश तिवारी दसवीं क

क्रिसमस आया

क्रिसमस आया,
नई सौगात का उपहार है लाया | शिक्षा उनकी जिदंगी में अपनाओ ,
जमीर बेच तुम अमीर मत बन जाओ |
इससे अच्छा,
फकीर बन तुम शान से जिंदगी को बिताओ ,
दूसरों की गलतियो को क्षमा करने का गुण अपनाकर ,
तुम अच्छे सच्चे अर्थों में एक मानव कहलाओ |
रजत
नौवीं क

उजाला खुद बनो

अंधेरों से डरते क्यों हो,रास्ता खुद रोशन कर लो।
चाँद - सितारों की चाह छोड़ो अपना उजाला खुद बनो |
रातें चाहे काली हों,
दिल में दीप जलाएं चलो
मुश्किलों की आंधी में भी
मन में उम्मीद बनाए रखो।
हार को साथी न मानो
डर से समझौता मत करो।
गिरकर भी जो मुस्कुराते हैं,
नया इतिहास रचाते हैं।
कदम थक जाएँ, तो थोड़ा ठहरो,
पर अपने इरादे मत छोड़ो ।
हर ठोकर से सीखते चलना
खुद को कमजोर न समझना ।
मंजिल उन्हीं को मिलती है,
जो कभी रुकना न चाहे,
अंधेरी रातों मे भी,
अपना उजाला खुद बन जाएँ ।
सक्षम
नौवीं क

वसंत ऋतु

वसंत ऋतु आई, चारों और खुशहाली छाई।
रंग-बिरंगे फूल खिल आए,आकाश में पंछी चहचहाये।‘
पेड़ की डालों पर, देखो है हरियाली छाई ।
आई - आई,
वसंत ऋतु आई।
सबको भाती वसंत ऋतु, खुशियाँ लाती वसंत ऋतु ।
वसंत ऋतु जब - जब आती है, हरियाली छा जाती है।

लबली यादव
सातवीं ग



बस वही जी पाएगा...

राहों के कांटों से डरकर अगर मंज़िलें बदल देगे

तो मंज़िलों का वजूद खतम हो जाएगा।

अगर शोर से डरकर मौन हो जाएंगे

तो खामोशी के लिए आवाज़ कौन उठाएगा ?

हवाओं से डरने लगेंगे, तो तूफ़ानों से कौन टकराएगा ?

और रेत के घरौंदे कौन बनाएगा?

लोगों का तो काम है बोलना, इनकी बातें हमारे हौंसले पस्त कर देंगी

तो कामयाबी की मिसालें कौन कायम करेगा?

हार से डर कर यदि कोशिश करना ही छोड़ दिया

तो जीत के जश्न कौन मनाएगा ?

दुखों के कारण अगर जिंदगी का दरवाजा ही बंद कर देंगे

तो खुशियों का पैगाम किस दर पर आएगा?

बिछडने के डर से यदि मिलना ही छोड़ दिया

तो रिश्तों का अस्तित्व न बच पाएगा ।

हर छोटी-छोटी बात को दिल से लगा लेंगे

तो यह बर्तन तो एक दिन में भर जाएगा।

मरने के डर से यदि जीना ही छोड़ दिया

तो इस दुनिया में फिर कोई न बच पाएगा।

सब दुखों को भुला कर जो खुशियों को अपनाएगा

और हार से सबक लेकर, जीत की ओर, फिर से एक नया कदम बढ़ाएगा

अब वही जी पाएगा, बस वही जी पाएगा !....

नवनीत कौर बारहवीं क

मन के हारे हार और मन के जीते जीत

क्या किसी ने सोचा है कि आखिर कैसे एक महावत एक बड़े हाथी को अपने वश में कर लेता है। सोचने वाली बात यह है, यहाँ अगर हम इसका उत्तर खोजें तो पता चलता है कि जब वह हाथी छोटा था जब महावत ने उसे एक रस्सी से बाँधकर रखा था उस छोटे से हाथी के बच्चे ने अपने आप को छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर वह असफल रहा। उसके दिल में यह डर बैठ गया कि रस्सी उससे ज्यादा ताकतवर है और वह कभी उससे छूट नहीं सकता और जब वह बड़ा हुआ उसने कभी अपने आप को छुड़ाने की कोशिश नहीं की।

ठीक इसी प्रकार एक मनुष्य की असफलता उसके मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है। अगर वह अपनी हार को ही लेकर बैठा रहे, तो वह कभी सफल होने की नहीं सोचेगा। कहा जाता है कि मनुष्य सफल होने से पहले कई बार हारता है वह अपनी असफलताओं से दुखी नहीं होता वह आगे बढ़ता है और सफल होने की कोशिश करता है। अतः उसे सफलता हासिल हो ही जाती है।

कोमल आठवीं ख

मेरा देश

यारा प्यारा मेरा देश, सजा-संवारा मेरा देश ।।
दुनिया जिस पर गर्व करे, नयन सितारा मेरा देश ।।
चाँदी सोना मेरा देश, सफल सलोना मेरा देश ।।
सुख का कोना मेरा देश, फूलों वाला मेरा देश ।।
झूलों वाला मेरा देश, गंगा यमुना की माला का मेरा देश ।।
फूलों वाला मेरा देश, आगे जाए मेरा देश ।।
नित मुस्काए मेरा देश,
इतिहासों में नाम लिखायें मेरा देश... **समीक्षा आठवीं**

हाय रे पढ़ाई

यह पढाई है या एवरेस्ट की चढ़ाई,
हर विषय में गड़बड़ है भाई,
विज्ञान के फॉर्मुले सें दिल घबराता हैं,
उन्हें याद करके चक्कर हमें आता हैं।
अंग्रेज़ी में हर जगह यह रूल है,
यह रूल पढ़-पढ़ कर बन गए हम फूल हैं,
गणित तो हमारा सिर खाता है,
प्लस, प्लस प्लस है फिर,
प्लस-माईनस माईनस कैसे हो जाता है?
इतिहास पढ़-पढ़ हम बोर हो जाते है।
अरे जो होना था हो गया दोबारा क्यों दोहराते हैं?
भूगोल के आगे मेरा डिब्बा गोल हैं।
पढ़-पढ़ के हिन्दी दिमाग हमारा थक गया,
इस कम्प्यूटर की वजह से चश्मा हमें लग गया।
कभी होम वर्क, कभी परीक्षा दिल हमारा रोता है।
इतना भारी बस्ते को नन्हा बचपन ढोता है।

महादेवी दसवीं क

मैं-तू में बंट गयी

मैं अपनो से कट गई, दो भागों में बंट गई।
जब आई धरती पर तो,
मैं-तू में बंट गई,
कदमों में बंट गई.
जब बोलना सीखा तो,
ज्ञान-अज्ञान में बंट गई,
जब जाना मैं कौन हूँ,
तो धर्म में बंट गई,
जब जाना कब क्या करूँ,
तो समय में बंट गई,
जब मिली किसी से,
तो सगति में बंट गई,
मैं अपने से कट गई,
जब आई धरती पर तो,
मैं- तू में बंट गई ।।

प्रिन्सी
नौवीं ख

सपनों मे रख आस्था

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा, त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा ।।
गलती कर ना घबरा, गिरकर फिर हो जा खड़ा ।।
समस्याओं को रास्तों से निकाल दे, चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।।
रख हिम्मत तूफानों से टकराने की, जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की ।।
जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबाबत भी कर ।।
फिर देख किस्मत क्या-क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी ।।

इंदरप्रीत
ग्यारहवीं

कैसे बताऊँ

कैसे बताऊँ थाह मैं, उस त्यागमयी व्यक्तित्व की,
जिसने सर्वस्व त्याग दिया, है समर्पण ही छवि जिसकी।
है रागनी वह चाँद की, और ताप है वह सूर्य का.
कैसे बताऊँ शौर्य में, संसार के अस्तित्व का।
सार है जो श्वास का, परिभाषा है जो प्रेम की,
कैसे बताऊँ भावना, ममता के उस जलधाम की।
संसार है संतति की जो, प्राण है परिवार की,
कैसे बताऊँ अनिवार्यता, परमात्मा के रूप की।
नीरस है जग बिन ममता के,
कैसे बताऊँ माँ तुझे, अमृत है विष बिन आपके ।।

आरव
नौवीं ग

जीवन के कड़वे सत्य

अगर उपवास करके भगवान खुश होते तो, इस दुनिया में बहुत दिनों तक खाली पेट रहने वाला भिखारी सबसे सुखी इन्सान होता। उपवास अन्न का नहीं विचारों का करें। तुम शक्तिशाली हो सकते हो, पर समय तुमसे भी अधिक शक्तिशाली हैं। एक पेड़ से लाखों माचिस की तिलियों बनाई जा सकती हैं, पर एक माचिस की तीली से लाखों पेड़ भी जल सकते हैं।

जीवन की कड़वी सच्चाई जिसे हम समझना नहीं चाहते। एक पत्थर सिर्फ एक बार मंदिर जाता है और भगवान बन जाता है। इन्सान हर रोज मंदिर जाते हैं फिर भी पत्थर ही रहते है ? **प्रियदर्शिनी दसवीं क**

नारी शक्तिः बदलते भारत का चेहरा

भारत एक ऐसा देश है जहाँ नारी को हमेशा शक्ति का रूप माना गया है- कभी दुर्गा, कभी लक्ष्मी, तो कभी सरस्वती शक्ति के रूप में । लेकिन लंबे समय तक महिलाएँ सामाजिक बंधनों में जकड़ी रहीं। आज का भारत अब बदल रहा है और इस बदलाव का सबसे उज्ज्वल चेहरा है - नारी शक्ति । आज महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, खेल, राजनीति, चिकित्सा, रक्षा और उद्योग, जैसे हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही हैं। जैसे कल्पना चावला ने उड़ान भरी, पी. वी सिंधु ने ओलंपिक में देश का नाम रोशन किया, किरण बेदी पुलिस में मिसाल बनीं, और निर्मला सीतारमण देश की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री बनीं।

भारत सरकार ने भी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना । इन प्रयासों से नारी आत्म निर्भर बन रही है ।

आज की नारी आत्मविश्वासी है, अपने अधिकारों को जानती है और समाज में बराबरी की भागीदारी निभा रही है। वह अब सिर्फ घर की नहीं, देश की भी निर्माता बन चुकी है। “नारी शक्ति ही बदलते भारत की असली पहचान है। तब नारी आगे बढ़ती है, तभी देश आगे बढ़ता है।“ **सिमरन दसवीं ग**

नजरिया सही, तो सफलता है पक्की

आप कितने कामयाब होते हैं, यह आपके नजरिये पर निर्भर करता है। बेहतर नजरिया यानी सकारात्मक सोच वाला इनसान। ठीक इसके विपरीत यदि आपकी सोच नकारात्मक है, तो आपको नीचे गिरने से भी कोई नहीं रोक सकता। आप जहां है, वहीं रह जाते हैं। अंश और कालासुर की कहानी कई लोगों ने सुनी है। एक बहुत ही प्राचीन ग्रंथ में बतायी गयी यह कहानी सकारात्मक सोच का बहुत अच्छा उदाहरण है। यदि आपने नहीं सुनी है, तो सुनें। कालासुर एक राक्षस था। उसने हर आदमी के दिल में अपनी दहशत पैदा कर रखी थी। एक दिन 17 साल का एक भेड़ चरानेवाला लड़का अंश अपने भाइयों से मिलने के लिए आया। उसने अपने भाइयों से पूछा कि तुम लोग इस राक्षस से लड़ते क्यों नहीं हो? भाइयों ने जवाब दिया कि क्या तुमने उस राक्षस का आकार नहीं देखा? वह कितना बड़ा है? वह एक झटके में हमें मार डालेगा। इस पर अंश ने कहा, बात यह नहीं है कि बड़ा होने की वजह से उसे मारा नहीं जा सकता। बात तो यह है कि वह इतना बड़ा है कि उस पर निशाना आसानी से लगाया जा सकता है, उस पर लगा निशाना कभी चूक ही नहीं सकता।

इस कहानी का अंत हम सभी जानते हैं कि अंश ने उस राक्षस कालासुर को अपनी गुलेल से मार डाला। राक्षस वही था,

लेकिन अंश का नजरिया उसे उसके भाइयों से अलग करता था। यदि भाइयों की तरह ही अंश का भी नजरिया होता, तो वह जिंदगी भर कालासुर से डरता रहता और उसका अन्याय सहता रहता।

यह कहानी एक सीख और देती है कि कभी भी किसी समस्या को देख कर घबराएं नहीं। यह न सोचें कि भगवान ने मुझे क्यों यह समस्या दी। इतिहास गवाह है कि हर बड़ी समस्या हल हो जाने के बाद ढेर सारी खुशियाँ और अवसर ले कर आती है। जाने-माने लेखक नेपोलियन हिल ने भी कहा है कि हर समस्या अपने साथ अपने बराबर का या अपने से भी बड़ा अवसर साथ लाती है।

कई सफल लोगों ने इस बात को माना है कि जब हमारा नजरिया सही होता है, तो हमें महसूस होता है कि हम हीरों से भरी हुई जमीन पर चल रहे हैं।

बात पते की.....

+ मौके हमेशा हमारे पैरों के नीचे दबे होते हैं। हमें उनकी तलाश में कहीं जाने की जरूरत नहीं, हमें केवल उनको पहचान लेना है।

+ समस्या को देख कर, उसका आकार देख कर न घबरायें। दुनिया में ऐसी कोई समस्या ही नहीं बनी है, जिसका हल न हो।

सात्विका

कक्षा दसवीं ग

माँ और बचपन का साथ

थामी उसकी ऊँगली मैंने, नन्हें - नन्हें
हाथों से,
कई बार जब हुई बीमार
तो जागी वो कई रातों में,
ऊँगली पकड़े खेलती थी वो
बचपन के दिन उन सुहानो में,
जब भी माथा गरम था होता,
वह रोती थी, बिलखती थी
जब चोट मुझे लग जाती थी
दर्द मुझे यहाँ होता था,
रोने वो लग जाती थी
अब वो दिन कहाँ आते हैं
जब माँ के संग बतियाते है
अब समय नहीं है हमारे पास
सच में वो पल थे बेहद खास
अभागे हैं वो जो इस ममता से दूर है,
उसका वो आँचल तो हमारे लिए शून्यता में भी नूर है
उसके आँचल के लिए मैं यह दुनिया वार दूँ
उसकी ममता के सामने मैं खुद को हार दूँ

राई साहा

दसवीं ख


पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1, जालंधर छावनी
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO.-1 JALANDHAR CANTT
PM SHRI












AMBEDKAR NATIONAL INSTITUTE OF TECHNOLOGY JALANDHAR
STEM PROMOTION WEEK
PRAYAAS
ONE DAY AS A SCIENTIST
STEM

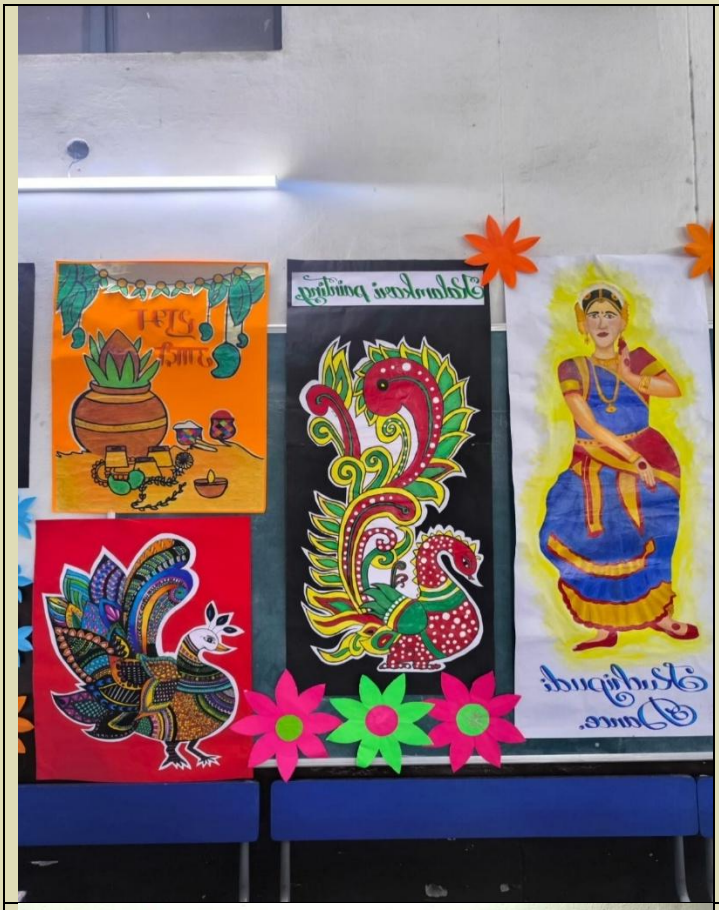


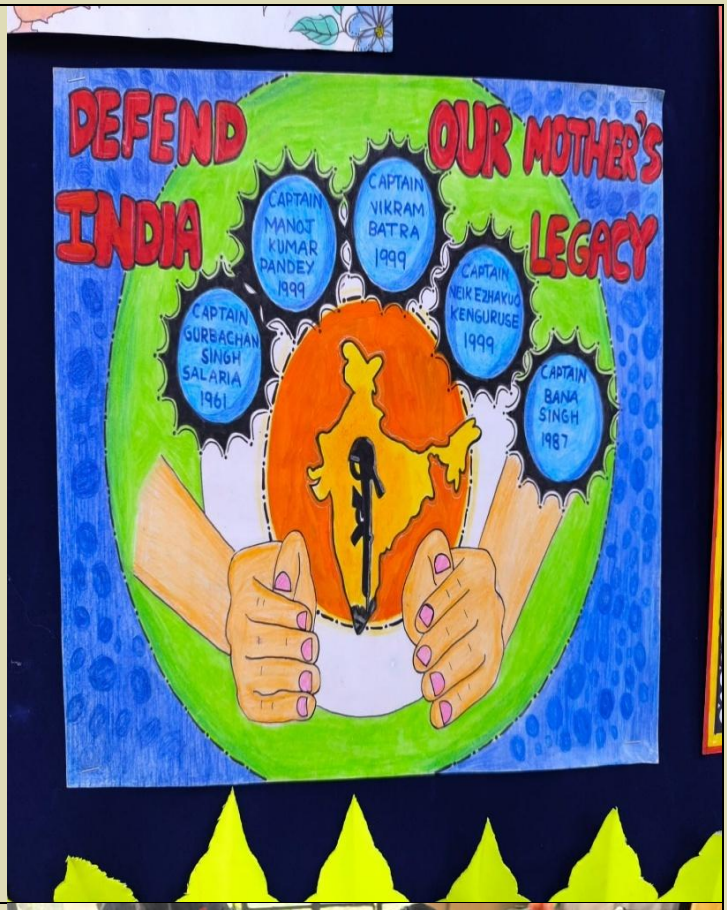

पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1, जालंधर छावनी
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO -1 JALANDHAR CAN





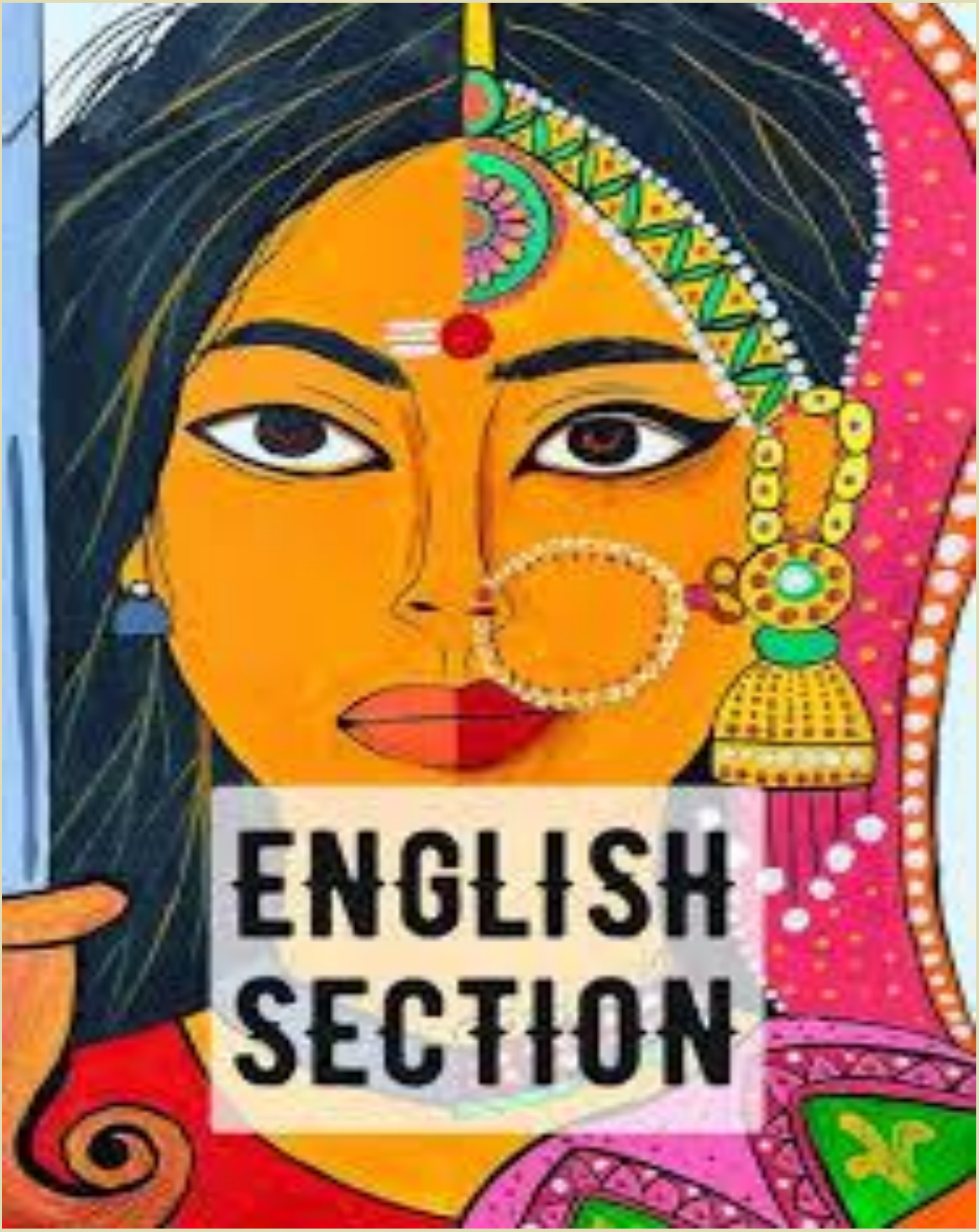





DEFEND
OUR MOTHER'S
INDIA
LEGACY
CAPTAIN MANOJ KUMAR PANDEY 1999
CAPTAIN VIKRAM BATRA 1999
CAPTAIN GURBACHAN SINGH SALARIA 1961
CAPTAIN NEIKEZHAKUO KENGURUSE 1999
CAPTAIN BANA SINGH 1987






ENGLISH
SECTION

Respect: A Timeless Virtue

In every era, culture, and corner of the world one value remains constant-respect. It is not bound by age, status or time. Whether in ancient gurukuls or modern classrooms, respect has always been the foundation of good character and strong relationships. It is truly a timeless virtue.

Respect means treating others with kindness, listening without interrupting and valuing their opinions, even if we disagree. In school, respect is shown when students stand up to greet teachers when we we speak politely to classmates, or when we follow rules not out of fear, but out of understanding.

In today's fast-paced and digital world, respect is more important than ever. Technology may have made us more connected, but sometimes we forget the basics-greeting elders with folded hands, saying "please" and "thank you" or simply waiting our turn to speak. These small gestures reflect big values.

A respectful student earns trust, builds healthy friendships, and creates a positive environment wherever they go Respect also extends beyond people to our traditions, our schod, our country, and nature. When we respect all forms l ful and responsible of life we grow as thoughtful and responsible individuals.

Let us remember that being respectful does not make us less powetiful-it makes us truly admirable.

As we chase our dreams, let us carry this timeless virtue with us.

Because long after achievements fade, it is our values that people remember.

Satvika Sirla
10th C

Echoes from the Heights: The Spirit of Kargil

The Kargil War of 1999 was not just a military conflict – it was a defining moment of courage and sacrifice. When Pakistani forces occupied Indian territory in Kargil, brave Indian soldiers launched Operation Vijay, fighting through icy cliffs and relentless fire to reclaim every post.

Amid the thunder of battle emerged stories of young heroes who chose country over life, duty over fear. Their sacrifice was not in vain – it became a symbol of India's unwavering resolve.

Kargil reminds us that freedom is earned, not given. Each fallen soldier etched a legacy of valor into the nation's soul. We remember them not just in memories, but in every heartbeat of a grateful nation....**Sehajdeep Kaur (9th B)**

Breeze and Bonds

The wind that ruffled my hair
On an autumn day,
Came and went without a say.
Same are the people I meet every day,
Who say stuff
And move on way.
These people make one feel dismay,
And we start doubting
Our own way.
If you meet these people someday,
Never hold the day in rue;
As many come to go,
But only a few are true
And care of you. **– Kunal Yadav 10th C**

“Keep Going: You’re Closer Than You Think”

Have you ever felt like quitting?
Maybe it was during a tough math lesson, a failed test, or when your hard work didn’t get noticed. We’ve all been there – tired, frustrated, and wondering “what’s the point?”
But here’s something I’ve come to believe:
The moment you feel like giving up is often the moment just before things get better.
Motivation isn’t always loud or exciting. Sometimes it’s quiet – like getting up for school even when you’re tired, or trying again after failing once, or helping a classmate even when your day isn’t going great.
Positive thinking isn’t about pretending everything is perfect. It’s about choosing to believe that better days are ahead even when today is tough.
This is hard, but I’m not giving up.
I’ve made it through before – I’ll do it again.
I’m not perfect, but I’m improving.
You don’t need to be the smartest or the strongest. You just need to be the one who keeps going.
Success doesn’t always come to those who are the best. It comes to those who try, fall, and still get up. So take a deep breath, wipe the doubt off your face, and take one more step – because you’re closer than you think.

– Divyanshi ‘10th C'

Knowledge

Knowledge is a multifaceted concept that has been explored in various fields, including philosophy, education, and artificial intelligence. At its core, knowledge refers to the collection of information, skills, and insight that individuals acquire through experience, education, and interaction.

Importance of Knowledge:

Empowers Decision-Making: Knowledge enables individuals to make informed decisions, driving personal and professional growth.

Supports Personal Growth: Knowledge shapes personalities, opinions, and worldviews, contributing to emotional intelligence, creativity, and social awareness.

Without opening the book we can't read the story. Same with opening the brain – we can't get knowledge.

– Ashlesha Bairagi '10th C'

The Beauty of Simplicity

In a busy and competitive world, simplicity is a quiet strength. It reflects honesty, humility, and inner peace. A simple person doesn't try to impress others – they are genuine, modest, and true to themselves. Simplicity in speech and behavior helps reduce stress and builds deeper connections.

At school, it's seen in neat work, discipline, habits, and respect between students who stay focused, help others, identify, and follow routines with sincerity, showing true simplicity. Great personalities like Mahatma Gandhi showed us that simple living can lead to powerful impact.

In a world full of trends and distractions, choosing simplicity shows strength of character. It means valuing relationships, duties, and peace of mind over material things. Simplicity isn't about having less – it's about appreciating more.

"Be simple, be real, be beautiful."

– Simran Xth 'C'

Save Environment

An environment is defined by the nature. It nourishes life on earth. Everything which we use to continue our life comes under the environment such as water, air, sunlight, land, plants, animals, and other natural things. Our environment plays a very significant role in making possible the existence of life on earth. However, our environment is getting worse day by day because of the man-made technological advancements in the modern era.

Thus, environment pollution has become the biggest problem that we are facing today.

Environmental pollution is affecting our life negatively in various aspects of life such as socially, physically, economically, and emotionally. Contamination of the environment brings a lot of diseases with which human beings suffer for the whole of their life. It is not a problem of a community or a city but it is a worldwide problem which cannot be solved by the effort of one. If not addressed properly, it may end the existence of life one day.

Name: Gavy

Class: Xth 'C'



A Little Act of Kindness

On that exhausted day, I was free,
And layed beneath a shadow of a tree.
There was an ice-cream shop on the way,
So, I ate a cone to feel okay.

Suddenly, my eyes fall on him –
A child with his bare feets,
Stood on a burning road,
Selling soaps on the mode.

I felt too bad,
And gave him what I had.
I gave him a footwear and a delicious ice-cream,
He giggled and I felt it like a dream.

The little act of kindness,
Made me feel satisfied all the day.
With a smile on my face,
I walked toward my way.

R Ananya
9th C

SCHOOL ACTIVITIES




















स्वच्छता पखवाड़ा






संस्कृत

संस्कृत प्रार्थना

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ: ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ॥

भावार्थ :- हे हाथी के जैसे विशालकाय जिसका तेज सूर्य की सहस्त्र किरणों के समान हैं । बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करते है ।

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपद: ।

शत्रुबुध्दिविनाशाय दीपजोतिर्नामोस्तुते ॥

भावार्थ :- ऐसे देवता को प्रणाम करती हूँ ,जो कल्याण करता है, रोग मुक्त रखता है, धन सम्पदा देता हैं, जो विपरीत बुध्दि का नाश करके मुझे सद मार्ग दिखाता हैं, ऐसी दीव्य ज्योति को मेरा परम नमस्कार हो ।

आदित्यनमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने दीर्घ आयुर्बलं वीर्य तेजस तेषां च जायत ।

अकालमृत्युहरणम सर्वव्याधिविनाशम सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धरायाम्यहम ॥

भावार्थ :- भगवान सूर्य को नमस्कार जिस तरह वह बढ़ रहे हैं दिन का आरम्भ हो रहा है जिसका तेज, शक्ति को दीर्घ आयु प्राप्त है जिसे मृत्यु पर विजय प्राप्त है , जो सभी की रक्षा करता है ऐसे सूर्य देवता के चरणों में समस्त तीर्थ का सुख है ।

सूर्य संवेदना पुष्पे:, दीप्ति कारुण्यगंधने ।

लब्ध्वा शुभम् नववर्षेअस्मिन् कुर्यात्सर्वस्य मंगलम् ॥

भावार्थ :- जिस तरह सूर्य प्रकाश देता है, पुष्प देता है, संवेदना देता है और हमें दया भाव सिखाता है उसी तरह यह नव वर्ष हमें हर पल ज्ञान दे और हमारा हर दिन, हर पल मंगलमय हो ।

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी ।

विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

भावार्थ :- ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को मेरा नमस्कार, वर दायिनी माँ भगवती को मेरा प्रणाम । अपनी विद्या आरम्भ करने से पूर्व आपका नमन करता हूँ , मुझ पर अपनी सिद्धि की कृपा बनाये रखें ।

या देवी सर्वभूतेशु, शक्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः ॥

भावार्थ :- देवी सभी जगह व्याप्त है जिसमे सम्पूर्ण जगत की शक्ति निहित है ऐसी माँ भगवती को मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम ।

या कुंदेंदुतुषारहार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता । या वीणावरदण्डमंडितकरा, या श्वेतपद्मासना ॥

या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता । सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥

भावार्थ :- जो विद्या देवी कुंद के पुष्प, शीतल चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह श्वेत वर्ण की है और जिन्होंने श्वेत वर्ण के वस्त्र धारण किये हुए है, जिनके हाथ में वीणा शोभायमान है और जो श्वेत कमल पर विराजित हैं तथा ब्रह्मा,विष्णु और महेश और सभी देवता जिनकी नित्य वन्दना करते है वही अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाली माँ भगवती हमारी रक्षा करें ।

भावना (कक्षा अष्टमी 'ब)

गुरु स्तुतिः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अर्थात् गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है। गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है। उन सद्गुरु को प्रणाम है।

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

जो अखण्ड है, सकल ब्रह्माण्ड में समाया है, चर-अचर में तरंगित है। उस (प्रभु) के तत्व रूप को जो मेरे भीतर प्रकट कर मुझे साक्षात दर्शन करा दे, उन गुरु को मेरा शत् शत् नमन है। अर्थात् वही पूर्ण गुरु है ।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अर्थात् अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे हुए जीव की आँखें जिसने ज्ञानरूपी काजल की शलाका से खोली हैं, ऐसे श्री सदगुरू को नमन है, प्रणाम है।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।

तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थादेशको गुरुरुच्यते॥

अर्थात् धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करनेवाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं ।

नमोस्तु गुरुवे तस्मै, इष्टदेव स्वरूपिणे।

यस्य वाग्मृतम् हन्ति,विषं संसार संज्ञकम्।।

अर्थात् उन गुरूदेव रूपी इष्टदेव को वन्दन है, जिसकी अमृत वाणी अज्ञानता रूपी विष को नष्ट कर देती है।

निवर्तयत्यन्यजनं प्रमादतः स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते।

गुणाति तत्त्वं हितमिच्छुरंगिनाम् शिवार्थिनां यः स गुरु र्निगद्यते॥

अर्थात् जो दूसरों को प्रमाद करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप मार्ग पर चलते हैं। हित और कल्याण की कामना रखनेवाले को तत्त्वबोध कराते हैं, उन्हें गुरु कहते हैं।

नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुसंनिधौ।

गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत्॥

अर्थात् गुरु के पास हमेशा उनसे छोटे आसन पे बैठना चाहिए, गुरु आते हुए दिखे, तब अपनी मनमानी से नहीं बैठना चाहिए ।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च।

दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना गुरुकृपां परम्॥

अर्थात् बहुत कहने से क्या ? करोडों शास्त्रों से भी क्या ? चित्त की परम् शांति, गुरु के बिना मिलना दुर्लभ है

प्रेरकः सूचकश्वैव वाचको दर्शकस्तथा।

शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः॥

अर्थात् प्रेरणा देनेवाले, सूचन देनेवाले, (सच) बतानेवाले, (रास्ता) दिखानेवाले, शिक्षा देनेवाले, और बोध करानेवाले – ये सब गुरु समान है ।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते।

अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥

अर्थात् 'गु'कार याने अंधकार, और 'रु'कार याने तेज। जो अंधकार का (ज्ञान का प्रकाश देकर) निरोध करता है, वही गुरु कहा जाता है।

शरीरं चैव वाचं च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च।

नियम्य प्राञ्जलिः तिष्ठेत् वीक्षमाणो गुरोर्मुखम्॥

अर्थात् शरीर, वाणी, बुद्धि, इंद्रिय और मन को संयम में रखकर, हाथ जोडकर गुरु के सन्मुख देखना चाहिए ।

अदिति

कक्षा अष्टमी ' क '

विद्यार्थी जीवन विषयक श्लोका:

1. विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
   पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

भावार्थ: विद्या से विनय अर्थात विवेक व नम्रता मिलती है, विनय से मनुष्य को पात्रता मिलती है यानी पद की योग्यता मिलती है। वहीं, पात्रता व्यक्ति को धन देती है। धन फिर धर्म की ओर व्यक्ति को बढ़ाता और धर्म से सुख मिलता है। इस मतलब यह हुआ कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए विद्या ही मूल आधार है।

2. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनं:।
   चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।।

भावार्थ: बड़े-बुजुर्गों का अभिवादन अर्थात नमस्कार करने वाले और बुजुर्गों की सेवा करने वालों की 4 चीजें हमेशा बढ़ती हैं। ये 4 चीजें हैं: आयु, विद्या, यश और बल। इसी वजह से हमेशा वृद्ध और स्वयं से बड़े लोगों की सेवा व सम्मान करना चाहिए।

3. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
   न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:।।

भावार्थ: महज इच्छा रखने भर से कोई कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि उसके लिए उद्यम अर्थात मेहनत करना जरूरी होता है। ठीक उसी तरह जैसे शेर के मुंह में सोते हुए हिरण खुद-ब-खुद नहीं आ जाता, बल्कि उसे शिकार करने के लिए परिश्रम करना होता है।

4. यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
   चित्ते वाचि क्रियायांच साधुनामेक्रूपता।।

भावार्थ: साधु यानी अच्छे व्यक्ति के मन में जो होता है, वो वही बात करता है। वचन में जो होता है यानी जैसा बोलता है, वैसा ही करता है। इनके मन, वचन और कर्म में हमेशा ही एकरूपता व समानता होती है। इसी को अच्छे व्यक्ति की पहचान माना जाता है।

5. न चोरहार्य न राजहार्य न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

भावार्थ:एक ऐसा धन जिसे न चोर चुराकर ले जा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, जिसका न भाइयों में बंटवार हो सकता है, जिसे न संभालना मुश्किल व भारी होता है और जो अधिक खर्च करने पर बढ़ता है, वो विद्या है। यह सभी धनों में से सर्वश्रेष्ठ धन है।

6. षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

भावार्थ: 6 अवगुण मनुष्य के लिए पतन की वजह बनते हैं। ये अवगुण हैं, नींद, तन्द्रा (थकान), भय, गुस्सा, आलस्य और कार्य को टालने की आदत।

7. काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।

भावार्थ: एक विद्यार्थी के पांच लक्षण होते हैं। कौवे की तरह हमेशा कुछ नया जानने की प्रबल इच्छा। बगुले की तरह ध्यान व एक्राग्रता। कुत्ते की जैसी नींद, जो एक आहट में भी खुल जाए। अल्पाहारी मतलब आवश्यकतानुसार खाने वाला और गृह-त्यागी।

8. रूप यौवन सम्पन्नाः विशाल कुल सम्भवाः।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुकाः।।

भावार्थ: अच्छा रूप, युवावस्था और उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से कुछ नहीं होता। अगर व्यक्ति विद्याहीन हो, तो वह पलाश के फूल के समान हो जाता है, जो दिखता तो सुंदर है, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं होती। अर्थात मनुष्य की असली खुशबू व पहचान विद्या व ज्ञान ही है।

9. मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं मुखे।
हठी चैव विषादी च परोक्तं नैव मन्यते।।

भावार्थ: इस श्लोक में कहा गया है कि मूर्खों की पांच पहचान होती हैं। सबसे पहला अहंकारी होना, दूसरा हमेशा कड़वी बात करना, तीसरी पहचान जिद्दी होना, चौथा हर समय बुरी-सी शक्ल बनाए रखना और पांचवां दूसरों का कहना न मानना। श्लोक इन सभी पांच चीजों से बचने की प्रेरणा देता है।

10. दुर्जन: परिहर्तव्यो विद्यालंकृतो सन।
मणिना भूषितो सर्प: किमसौ न भयंकर:।।

भावार्थ:दुर्जन अर्थात दुष्ट लोग भी अगर बुद्धिमान हों और विद्या प्राप्त कर लें, तो भी उनका परित्याग कर देना चाहिए। जैसे मणि युक्त सांप भी भयंकर होता है। इसका मतलब यह हुआ कि दुष्ट लोग कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, उनकी संगत नहीं करनी चाहिए।

संकलन कर्ता

हर्ष कक्षा अष्टमी ' ग'

नीति श्लोका:

1. देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चन:।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

भावार्थ: देवताओं के रूठ जाने पर गुरु रक्षा करते हैं, किंतु गुरु रूठ जाए, तो उस व्यक्ति के पास कोई नहीं होता। गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। इसका मतलब यह है कि अगर पूरा विश्व व भाग्य भी किसी से विमुख हो जाए, तो गुरु की कृपा से सब ठीक हो सकता है। गुरु सभी मुश्किलों को दूर कर सकते हैं, लेकिन अगर गुरु ही नाराज हो जाए, तो कोई अन्य व्यक्ति मदद नहीं कर सकता।

2. अनादरो विलम्बश्च वैमुख्यम निष्ठुर वचनम।
पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च।।

भावार्थ: अपमान व अनादर के भाव से दान देना, देर से दान देना, मुंह फेरकर दान देना, कठोर व कटु वचन बोलकर दान देना और दान देने के बाद पछतावा करना। ये सभी पांच बातें दान को पूरी तरह दूषित कर देती हैं।

3. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

भावार्थ: छोटे चित यानी छोटे मन वाले लोग हमेशा यही गिनते रहते हैं कि यह मेरा है, वह उसका है, लेकिन उदारचित अर्थात बड़े मन वाले लोग संपूर्ण धरती को अपने परिवार के समान मानते हैं।

4. सुलभा: पुरुषा: राजन् सततं प्रियवादिन:।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ:।।

भावार्थ: हमेशा प्रिय और मन को अच्छा लगने वाले बोल बोलने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन जो आपके हित के बारे में बोले और अप्रिय वचन बोल व सुन सके, ऐसे लोग मिलना दुर्लभ है।

8. अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

भावार्थ: सभी 18 पुराणों में महर्षि वेदव्यास जी ने दो विशेष बातें कही हैं। पहली बात तो यह है कि परोपकार करना पुण्य है और दूसरी बात लोगों को दुख देना ही पाप हैं।

संकलन कर्ता

सान्वी

कक्षा सप्तमी ' ग '

जय वृक्ष! जय वृक्ष

श्रूयताम् सर्वे वृक्षपुराणम्,
क्रियताम् तथा वृक्षारोपणम्।

वृक्षस्यास्ति सुन्दरम् याति मूलं बहुदूरम्।।

मूलेपी अन्नम्, तस्य काष्ठं कठिनम्,
काष्ठं कठिनं भवति इन्धनार्थम्।
पर्णेषु भवति हरितद्रव्यम्,
अतो हि अस्ति रे पर्ण हरितम्।।

पुष्पम् सुन्दरम्, अतीव मोहकम्,
पुष्पम् तस्य भवति रे देवपूजार्थम्।
फलम् रसमयं, तस्य फलं स्वादपूर्णम्,
फलम् हि अस्ति रे खगस्य अन्नम्।।

जलवातप्रकाशैः निर्माति अन्नम्,
तेन हि अन्नेन वर्धते नित्यम्।
वृक्षस्य दृश्यताम् सर्वम् हि कार्यम्,
जीवनं तस्यास्ति परोपकारार्थम्।।

वृक्षे हि कुर्वन्ति विहगाः नीडम्,
केचित् तु कुर्वन्ति काष्ठे हि छिद्रम्।
आतपे तिष्ठति वर्षानुवर्षम्,
अन्येषां करोति छायाप्रदानम्।।

वृक्षो नैव अत्ति रे स्वकीयं फलम्,
सर्वम् हि अंगम् तस्य लोकहितार्थम्।
जनाः न स्मरन्ति तस्य उपकारम्,
बहुधा कुर्वन्ति वृक्षच्छेदनम्।।

मास्तु रे मास्तु ईदृशं पापं,
यथाशक्ति क्रियताम् वृक्षारोपणम्।
नैव रे नैवास्तु वृक्षकर्तनम्',
सर्वे हि कुर्वन्तु तद्संवर्धनम्।।

... आकृति ..नवमी अ"

कः किम् कर्त्तुम् न शक्तः

अन्धः किमपि न द्रष्टुम् शक्तः
पंगुः क्वापि न चलितुम् शक्तः।
मूकः किमपि न वक्तुम् शक्तः
बधिरः श्रोतुम् भवत्यशक्तः।।

मूढः बोद्धूम् न भवति शक्तः
न चापि भीरुः योद्धुम् शक्तः।
शयने रोगी भावत्यशक्तः
दीनः किमपि न दातुम् शक्तः।।

वृद्धः न भारं वोढुम् शक्तः
ईर्ष्युः कमपि न सोढुम् शक्तः।
नैव धावितुम् स्थूलः शक्तः
लोभी शान्त्या स्वपितुमशक्तः।।

अलसः मूर्खः निद्रायुक्तः
कार्यम् किमपि न कर्तुम शक्तः।
सदैव मिथ्याचरणे शक्तः
नैव स सत्यं द्रष्टुम् शक्तः।।

... लास्या अष्टमी ग ''

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
पदं पदं निधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे।।

त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः।।

साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजेः
भारतीय-संस्कृतिं
मानसे सदा धरेः।।

पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत।।

... शिविका सप्तमी

किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्।

एकस्मिन् ग्रामे एक महिला वसति स्म। सा एकं नकुलं पालयति स्म। नकुलस्य विषये तस्याः बहुप्रीतिः आसीत्। महिलायाः एकः शिशुः अपि आसीत्। तस्याः गृहस्य समीपे जलं न आसीत्। जलम् आनेतुं सा दूरं गच्छति स्म।एकस्मिन् दिने जलम् आनेतुं सा अगच्छत्। गृहे कोऽपि न आसीत्। तस्याः शिशुः निद्रितः आसीत्। महिला बहिः गता। तदा एकः सर्पः गृहम् आगतः। नकुलः सर्पम् अपश्यत्। सर्पः शिशुसमीपम् अगच्छत्। नकुलः तत्क्षणे एव सर्पस्य उपरि अपतत्। क्षणमात्रेण एव सः सर्पम् अमारयत्। महिला जलं गृहीत्वा आगता। नकुलस्य मुखं रक्तमयम्। सा अचिन्तयत् अयं नकुलं मम शिशुम् अखादत्। अतः एव अस्य मुखं रक्तम्। सा तत्क्षणे एव एकं शिलाखण्डं नकुलस्य उपरि अक्षिपत्। नकुलः मृतः। अनन्तरं सा गृहस्य अन्तः गता। तत्र शिशुः क्रीडति। तत्रैव मृतं सर्पम् अपश्यत। सा बहु दुःखिता अभवत्। अविचारेण मया नकुलः संहृतः इति सा पश्चात्तापेन पीडिता अभवत्। अतः किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्। विचारं कृत्वा एव कर्तव्यम्।

.....**अभिलिप्सा..... षष्ठी ख**

साधूनां जीवनम्

गङ्गातीरे एकः साधुः आसीत्। सः बहु उपकारं करोति स्म। यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोति स्म। एकस्मिन् दिने सः गङ्गानद्यां सनानं कर्तुं नदीं गतवान्। नदीप्रवाहे एकः वृश्चिकः आगतः। साधुः वृश्चिकं दृष्टवान्। तं हस्तेन गृहीतवान्। तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। किन्तु सः साधोः हस्तम् अदशत्। साधुः तं त्यक्तवान्। वृश्चिकः जले अपतत्। पुनः साधुः वृश्चिकं गृहीत्वा तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। पुनः वृश्चिकः हस्तम् अदशत्। एवम् अनेकवारं साधुः वृश्चिकं गृहीतवान्। वृश्चिक- अपि अदशत्।नदीतीरे एकः पुरुषः आसीत्।सः उक्तवान्साधुमहाराज। अयं वृश्चिकः दुष्टः। सः पुनः पुनः दशति। भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति। वृश्चिकं त्यजतु।साधुः उक्तवान्वृश्चिकः क्षुद्रः जन्तुः। दंशनं तस्य स्वभावः। सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति। अहं तु मनुष्यः। अहं मम परोपकास्वभावं कथं त्यजामि।यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति।

..... **दीक्षाषष्ठी क ....**

संस्कृत सूक्तियां

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

अर्थ– अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।

परोपकाराय सतां विभूतय:।

अर्थ– सज्जनों की विभूति हमेशा परोपकार के लिए होती है।

विद्या विहीन पशु।

अर्थ– विद्याविहीन (विद्या को ग्रहण ना करने वाला) मनुष्य पशु के समान होता है।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपु:।

अर्थ– आलस्य मनुष्य के शरीर में स्थित घोर शत्रु है।

अहिंसा परमो धर्म:।

अर्थ– अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।

सहसा विदधीत न क्रियाम्।

अर्थ– कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए।

नास्ति विद्या समं चक्षु।

अर्थ्– संसार में विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः।

अर्थ– जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है, उस घर से देवगण प्रसन्न होते हैं।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

अर्थ– शरीर धर्म का मुख्य साधन है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

अर्थ– अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।

वसुधैव कुटुंबकम।

अर्थ– पृथ्वी के सभी वासी एक परिवार है।

परोपकाराय सतां विभूतय:।

अर्थ– सज्जनों की विभूति हमेशा परोपकार के लिए होती है।

विद्या विहीन पशु।

अर्थ– विद्याविहीन (विद्या को ग्रहण ना करने वाला) मनुष्य पशु के समान होता है।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपु:।

अर्थ– आलस्य घोर शत्रु है।

अहिंसा परमो धर्म:।

अर्थ– अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।

मा कश्चिद् दुख भागभवेत।

अर्थ– कोई दु:खी न हो अर्थात सभी सुखी रहे।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थ– हमारी जन्मस्थली स्वर्ग से भी बड़ी होती है।

नास्तिको वेदनिन्दकः।

अर्थ– वेदों की निन्दा करने वाला इंसान नास्तिक होता है।

मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

अर्थ– किसी दूसरे के धन का लोभ नहीं करना चाहिए।

योग: कर्मसु कौशलम्।

अर्थ– समत्वरूप योग ही कर्मबंधन से छूटने का उपाय है।

सहसा विदधीत न क्रियाम्।

अर्थ– कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए।

अशांतस्य कुतः सुखम्।

अर्थ– अशांत यक्ति को कभी सुख नहीं मिल सकता है?

अनार्यः परदारव्यवहारः।

अर्थ– परस्त्री के विषय में बात करना अपराध है।

अनुलङ्घनीयः सदाचारः।

अर्थ– सदाचार का कभी उल्लङ्घन नहीं करना।

अनतिक्रमणीया नियतिरिति।

अर्थ– नियति को कोई नहीं टाल सकता।

अत्यादरः शंकनीयः।

अर्थ– अत्यधिक आदर करना शंका पैदा करता है।

ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।

अर्थ– शार्ङ्गरव कहता है– भगवन् प्रिय व्यक्ति का हमेशा साथ देना चाहिए।

गरीयषी गुरोः आज्ञा।

अर्थ– गुरुजनों की आज्ञा महान् होती है, उनका पालन करना चाहिए।

दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्?

अर्थ– तपस्वियों से प्रर्थना नहीं करना वह पहले से कष्ट सहन करते है।

भोगीव मन्त्रोषधिरुद्धवीर्यः।

अर्थ– अपराधी भी अपने किये हुए से भीतर से जलने लगे।

अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

अर्थ– अप्रिय किंतु परिणाम में हितकर हो ऐसी बात कहने वाले दुर्लभ होते हैं।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य।

अर्थ– मनुष्य धन की इच्छा से कभी तृप्त नहीं होता, उसका लालच बढ़ता जाता है।

विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।

अर्थ– मूर्खों के लिए मौन रहना ही सबसे बेहतर होता है।

सर्वे गुणा कांचनम् आश्रयन्ते।

अर्थ– सोने में सब गुण निहित होते हैं।

छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्।

अर्थ– राजा दिलीप ने रानी नन्दिनी को छाया की भांति अनुसरण किया है।

अतिस्नेह: पापशंकी।

अर्थ– अत्यधिक प्रेम होना भी पाप की आशंका को जन्म देता है।

अवेहि मां कामुधां प्रसन्नाम्।

अर्थ– कामधेनु गाय – मैं प्रसन्न हूं वरदान मांगो!



CREATIONS OF BUDDING ARTISTS











ਅਨਮੋਲ ਵਚਨ

1. ਖੁਸ਼ੀ ਬਾਹਰੋਂ ਨਹੀਂ, ਅੰਦਰੋਂ ਆਉਂਦੀ ਹੈ।

2. ਸਬਰ ਦਾ ਫਲ ਮਿੱਠਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

3. ਮਿਹਨਤ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਕਦੇ ਭੁੱਖਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ।

4. ਚੰਗੇ ਬੋਲ ਬੋਲੋ, ਚੰਗੇ ਕਰਮ ਕਰੋ।

5. ਸੱਚ ਦੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਜਿੱਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

6. ਲਾਲਚ ਬੁਰੀ ਬਲਾ ਹੈ।

7. ਮਾੜੇ ਕੰਮਾਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹੋ।.

8. ਸਤਿਗੁਰੂ ਦਾ ਨਾਮ ਜਪੋ।

ਨਾਮ ਸ਼ਨਾਇਆ ਜਮਾਤ ਛੇਵੀ . ਬੀ

ਕੁੜੀਆਂ

ਕੁੜੀਆਂ ਫੁੱਲਾਂ ਵਰਗੀਆਂ ,

ਹੁੰਦੀਆਂ ਨੇ ।

ਜੋ ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਮਹਿਕ ,

ਵੰਡਦੀਆਂ ਨੇ ।

ਸਾਂਭ ਕੇ ਰੱਖੋਗੇ ਤਾਂ ,

ਜਿੰਦਗੀ ਮਹਿਕਾ ਦੇਣਗੀਆਂ|

ਤੋੜ ਕੇ ਸੁੱਟੋਂਗੇ ਤਾਂ ,ਆਪ ਵੀ ਮੁਰਜਾ ਜਾਣਗੀਆਂ ।

ਨਾਮ- ਮਹਿਕਦੀਪ ਕੌਰ

ਜਮਾਤ ਦਸਵੀ . ਬੀ

ਲੇਖ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ

ਸਮਾਂ ਇੱਕ ਲਗਾਤਾਰ ਵਹਿੰਦਾ ਦਰਿਆ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਦਰਿਆ ਦਾ ਲੰਘ ਗਿਆ ਪਾਣੀ ਕਦੇ ਉਸੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਉਸੇ ਥਾਂ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ | ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗੁਜ਼ਰਿਆ ਸਮਾਂ ਦੁਬਾਰਾ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ | ਘੜੀ ਦੀਆਂ ਸੂਈਆਂ ਚੱਲਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ| ਕੋਈ ਵੇਖੇ ਜਾਂ ਨਾ ਵੇਖੇ, ਕੋਈ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰੇ ਜਾਂ ਨਾ ਕਰੇ। ਰੱਬ ਬਹੁਤ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਸਮਾਂ ਦਿੰਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਦੁੱਖ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ, ਬੰਦਾ ਹੀ ਇੱਕ ਅਜਿਹਾ ਜੀਵ ਹੈ| ਜਿਹੜਾ ਸਮੇਂ ਦੀ ਪ੍ਰਵਾਹ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਅਸੀਂ ਕਈ ਵਾਰ ਗੱਪਾਂ ਮਾਰ ਕੇ ਸਮਾਂ ਗੁਜ਼ਾਰ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਦਫ਼ਤਰ ਦੇ ਮੇਜ਼ 'ਤੇ ਬੈਠੇ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਥਾਂ ਵਿਚਰਦੇ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਤੋਂ ਗਵਾ ਰਹੇ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ| ਉਦੋਂ ਅਸੀਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਦਾ ਸਮਾਂ ਵੀ ਬਰਬਾਦ ਕਰ ਰਹੇ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਘੜੀ ਦੀਆਂ ਸੂਈਆਂ, ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਵੱਜਦਾ ਘੜਿਆਲ, ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ 'ਤੇ ਬਦਲਦੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਆਦਿ ਸਾਨੂੰ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਚਿਤਾਵਨੀ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਮਾਂ ਗੁਜ਼ਰ ਰਿਹਾ ਹੈ| ਕੁਝ ਇਸ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ। ਦੁਨੀਆ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਮਹਾਨ ਲੋਕ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ| ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਵੀ ਕੀਤੀ। ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਪੰਡਤ ਜਵਾਹਰ ਲਾਲ ਨਹਿਰੂ ਦੀ ਉਦਾਹਰਨ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਹਿ ਰੱਖਿਆ ਸੀ ਕਿ ਮੇਰੀ ਲਿਫ਼ਟ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕਿਤਾਬਾਂ ਪਈਆਂ ਹੋਣ, ਤਾਂ ਕਿ ਜੇ ਲਿਫ਼ਟ ਖੜੋ ਜਾਵੇ, ਤਦ ਉੱਥੇ ਖੜ੍ਹਿਆਂ ਵੀ ਕੁਝ ਪੜ੍ਹਿਆ ਜਾ ਸਕੇ। ਦੂਜੀ ਉਦਾਹਰਨ ਸ: ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਤਾ ਸੀ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਕੁਝ ਘੰਟੇ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਹੈ, ਪਰ ਉਹ ਆਪਣੀ ਕੈਦ ਵਾਲ਼ੀ ਕੋਠੜੀ 'ਚੋਂ ਕੱਢੇ ਜਾਣ ਤੱਕ ਇੱਕ ਮਹਾਨ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਜੀਵਨੀ ਪੜ੍ਹਦੇ ਰਹੇ। ਜੇ ਬੈਂਕਾਂ, ਰੇਲਾਂ, ਜਹਾਜ਼ਾਂ, ਹਸਪਤਾਲਾਂ, ਡਾਕਖਾਨਿਆਂ ਆਦਿ ਵਿੱਚ ਸਮੇਂ ਦੀ ਪਾਬੰਦੀ ਦਾ ਧਿਆਨ ਨਾ ਰੱਖਿਆ ਜਾਵੇ, ਤਦ ਅਨੇਕ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਜੇ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਵਿੱਚ ਹੀ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਨੀ ਸਿੱਖੀ ਜਾਵੇ, ਤਾਂ ਵੱਡੇ ਹੋ ਕੇ ਉਹ ਆਦਤ ਦਾ ਇੱਕ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਨਾਮ ਅਪੇਕਸ਼ਾ ਜਮਾਤ ਅਠਵੀ .ਏ


primary
PRESS



वक़्त गुजर जाता है

कभी कभी यूँ बैठे बैठे वक्त गुजर नहीं पाता है।

कभी कभी यादों का दरिया झरनों -सा बह जाता है ।।

एहसासों के सागर में कुछ गहरा लम्हा आता है।

उथले- पुथले जज्बातों में आकर यूँ थम जाता है।।

मानस मन की उलझनों का यूँ सूरज-सा ढल जाता है।

फिर नई सुबह का नया सवेरा नई रोशनी लाता है।।

इसी चाह की नई राह में नया विचार बन जाता है।

कभी- कभी फिर नया विचार भी खामोशी भर जाता है।।

बीती -गुजरी यादों का फिर मंजर - सा छा जाता है।

मन में चल रही इन उलझनों को कोई समझ नहीं पाता है।।

जिसने समझा उलझनों को, कोई और नहीं वो हम ही थे।

फिर सोचते हैं किसी तरह बस वक्त तो गुजर ही जाता है।।

स्वरचित

प्रीति सैनी
प्राथमिक शिक्षिका
पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक- 1 जालंधर छावनी

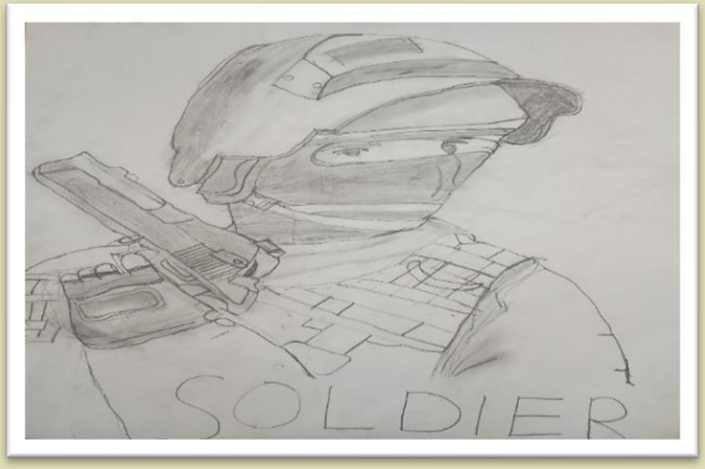
रचनात्मक सोच एक नई दिशा

हमारे विद्यालय के कुछ CWSN (Children With Special Needs) विद्यार्थियों ने अपने उत्कृष्ट प्रयासों और रचनात्मक सोच से यह सिद्ध कर दिया है कि वे किसी भी कार्य में किसी से कम नहीं हैं। हाल ही में बनाए गए पोस्टरों के माध्यम से इन विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा , आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया।

कक्षा चौथी के 'ग'आदर्श राणा तथा कक्षा दूसरी की 'ख'तनवी लाहौरे ने अत्यंत सुंदर और सार्थक पोस्टर तैयार किए। उनके कार्यों में न केवल विषय की स्पष्ट समझ दिखाई दी बल्कि , विचारों और संदेश की प्रभावशीलता भी सराहनीय रही। ,रंगों

इन विद्यार्थियों का यह प्रयास यह दर्शाता है कि उचित मार्गदर्शन प्रोत्साहन और अवसर मिलने , परCWSN बच्चे भी अपनी क्षमताओं को पूरी तरह निखार सकते हैं। उनके इस उत्कृष्ट कार्य पर विद्यालय को गर्व है और हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।







CREATIVITY OF OUR STARS

Mitali Madhuriya potrait by Rehaan	Vikram Batra Portrait by Arman
	
Sharma	Kalyan (4C)

Special Art by Child with special needs- Adarsh Rana(4th C)



गधा और गीदड़

एक गधा था। वह धोबी के यहाँ काम करता था। धोबी मैले कपड़ों का गट्ठर गधे की पीठ पर लादकर नदी पर कपड़े धोने जाता। वह कपड़े धो-सुखाकर पुनः उनका गट्ठर गधे की पीठ पर लादकर घर लौटता। गधा दिनभर नदी के किनारे चरता रहता। रात को भी धोबी उसे चरने के लिए छोड़ देता था। उसे गधे के खाने-पीने की कोई चिंता नहीं थी।

एक रात गधे की मुलाकात एक गीदड़ से हुई। दोनों में दोस्ती हो गई। रात होते ही दोनों आहार के लिए साथ-साथ घूमने-फिरने लगे। एक दिन घूमते-घूमते दोनों मित्र एक खेत में घुस गए। उस वक्त किसान सो रहा था। उन्होंने भरपेट साग-भाजी और ककड़ियाँ खाईं ।

पेट भर जाने पर गधा खुशी से झूम उठा। उसने गीदड़ से कहा, "मित्र, देखो तो, आकाश में तारे कैसे टिमटिमा रहे है! वातावरण भी कितना सुंदर है! मेरा तो आज गाने का मन हो रहा है।"

गीदड़ बोला, "रहने दे। तेरा गाना सुनकर किसान जाग जाएगा और मार-मारकर हमारा कचूमर निकाल देगा।"

"अरे, देख तो सही, मैं कितना अच्छा गाता हूँ।" कहकर गधा जोर-जोर से रैंकने लगा। गीदड़ उस समय धीरे-से खेत के बाहर निकल गया। गधे के रेंकने की आवाज़ सुनकर किसान जाग गया और लाठी लेकर दौड़ता हुआ आया। उसने पहले तो गधे को खूब पीटा। इसके बाद उसने गधे के गले में एक बड़ा-सा पत्थर बाँध दिया। पत्थर बहुत भारी था। गधा चलता तो पत्थर उसके दोनों अगले पैरों से टकराता। अतः गधा बड़ी मुश्किल से चलकर खेत के बाहर तक आ सका।गीदड़ ने गधे को देखकर कहा, "सचमुच, तुमने बहुत अच्छा गाया। सुनकर किसान बाग-बाग हो गया। इसीलिए तो उसने इतना भारी इनाम तेरे गले में लटका दिया है।

स्त्रोत :-कहानियाँ ही कहानियाँ

अद्विक भूमेश्वर बिसेन (चौथी क)

नानी

सदियों से ही चर्चा में

रहती आई है नानी,

हर बच्चे को प्यारी लगती उसकी अपनी नानी।

माँ से भी कहीं बढ़कर प्यार- दुलार लुटाती नानी,

नानी की गोद में बैठकर हम सब ने सुनी कहानी।

कहावतों और मुहावरों में भी स्थान पाती आई है नानी,

कहते हैं कि विपत्ति में पहले याद आती है नानी।

सुहानी

दूसरी क

हमारा स्कूल

कितना सुंदर है हमारा स्कूल।
इसमें खिलते हैं रंगबिरंगे फूल।-
फूलों की खुशबू मन को भाती।
सबके चेहरे पर मुस्कान लाती।
उन्हें देखकर मन ललचाता।
हर बच्चा खुश हो जाता।
टीचर हमको पाठ पढ़ाते।
नएनए ज्ञान सिखलाते।-
अच्छी बातें हमें बताते।
मेहनत करना हमें सिखलाते।
फूलों से हम सीख यह पाते।
मिलजुलकर आगे बढ़ते जाते।-
हमें अनुशासन का पाठ पढ़ाया।
साफ़सफाई का महत्व बताया।-
स्कूल हमारा सबसे प्यारा।
ज्ञान का है यह उजियारा।

हरविंदर कौर , कक्षा- चौथी क

वीर शिवाजी

दिन था ,का 1630 फरवरी 19
पावन हुआ जो दुर्ग वह शिवनेरी था।
धन्य थी वह जिजा माता,
जिसकी कोख से वीर शिवाजी जन्मा था।

मात्र सोलह वर्ष की आयु में,
जिसने स्वराज्य स्थापना की शपथ ली।
युवराज न होकर भी ,
छत्रपति की साख संभाली।

जिनकी हरी ,भरी पावन धरती-
वीर मराठा साम्राज्य कहलाती थी।
विराट सेना मुगलों की,
जिनके शौर्य से थर्राती थी।

मुगलों के सरदारों ने ,
खूब जाल बिछायें थे।
फिर भी उन्हें कुतर कर बाहर निकल आते ,
इसलिए 'डोंगरी चूहा'कहलाते थे।

वीर शिवाजी सिर्फ नाम नहीं ,
यह एक शौर्य पुरुष की कहानी है।
जिसने हिंदवी स्वराज्य की नींव रखी ,
ऐसी निरंतर अमिट निशानी है।

-अद्विक बिसेन- चौथी क

माँ

माँ सिर्फ एक शब्द नहीं है यह प्यार और स्नेह का एहसास है ,जब भी हम माँ कहते हैं तो सारी चिंताएँ जादू की तरह दूर हो जाती है। माँ दुनिया की सबसे प्यारी इंसान होती है। जो अपना प्यार निस्वार्थ भाव से अपने बच्चों पर लुटाती है। जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। माँ जीवन का आधार स्तंभ है ,वह गुरु तथा मार्गदर्शक होने के साथ ही सबसे अच्छी मित्र भी है। यह बात सबको पता है कि एक मां का आँचल अपनी संतान के लिए कभी छोटा नहीं पड़ता। माँ का प्रेम अपनी संतान के लिए इतना गहरा और अटूट होता है कि माँ अपने बच्चे की खुशी के लिए सारी दुनिया से लड़ लेती है। एक माँ का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है ,एक माँ बिना ये दुनिया अधूरी है। माँ वह है जो हमें जन्म देने के साथ ही हमारा लालन-पालन का भी कार्य करती है। एक माँ एक ऐसे व्यक्ति को दिया गया शब्द है जो जीवन भर अपने परिवार और बच्चों की भलाई ,विकास और कल्याण के लिए बलिदान और अपनी पहली प्राथमिकता देती है।

माँ-बच्चे के रिश्ते की खूबसूरती यह है कि उसके प्यार और बलिदान की कोई सीमा नहीं है। यह सबको पता है कि एक स्त्री अपने जीवन में पत्नी ,बेटी ,बहू जैसे ना जाने कितने रिश्ते निभाती है ,लेकिन इन सभी रिश्तों में से जिस रिश्ते को सबसे ज्यादा सम्मान प्राप्त है वह माँ का रिश्ता है। माँ को पृथ्वी पर ईश्वर का रूप माना गया है और इसलिए एक कहावत भी काफी लोकप्रिय है कि ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं रह सकता है इसलिए उसने माँ को बनाया है।"

वह एक निस्वार्थ प्यार करने वाली इंसान होती है। इसलिए माँ को धन्यवाद देने और आदर के लिये हर साल मई माह के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है।

नाम - निधिका

कक्षा - पांचवीं (क)

मुस्कुराना

हमारी मुस्कुराहट फूल जैसी होनी चाहिए, यदि कोई भी देखे उसे अच्छा लगे। वह हमेशा हमसे प्यार से बातचीत करे। हमारी मुस्कुराहट हमें हमेशा परेशानियो से दूर रखती है। हमारी मुस्कुराहट हमें सुन्दर बनाती है।

नाम मन्नत
कक्षा 3 अ

A dream come true

I prayed for a dream to come true,

A wish that felt just right for me, you.

I closed my eyes and hoped with glee,

My dream unfolded, happy and free.

It was a dream of joy and light,

Filling my heart with delight.

I thanked the universe with a grin,

My prayer was answered by my dream within.

Now I'm doing what I love to do,

My passion and dream, all coming true.

I chase my goals with a happy heart,

And my life's a journey is now my greatest art.

VIDHI SHARMA, PRT

PRIMARY ACTIVITIES:









70


Time Table
Shapes
जादुई
पिटारा


जादुई
पिटारा


रंगोत्सव - भारत के रंग

